कथा सरिता

वाणी ही परिचय है

एक राजा जंगल की सैर पर निकले। उनके साथ सैनिकों का दल भी था। घूमते-घूमते राजा को प्यास लगी। यह जानकर सैनिक पानी की तलाश में निकल पड़े। उन्होंने देखा कि एक कुआं है, जहां एक अंधा व्यक्ति राहगीरों को पानी पिला रहा है। सैनिकों ने उसे निर्देश के स्वर में कहा - ये अंधे! एक बड़े लोटे में पानी भर कर दो। अंधे को सैनिकों का यह व्यवहार अच्छा नहीं लगा। उसने कहा - मैं आप लोगों को पानी नहीं दे सकता। राजा के सिपाही गुस्से में वापस आ गए। पानी नहीं ला पाने की कहानी जब सेनापति ने सुनी, तो वह भी कुएं की ओर चल पड़ा। अंधा लोगों को पानी पिला रहा था। सेनापति ने उससे कहा - अंधे भाई, जरा मुझे एक लोटा पानी तो दे देना, प्यास से हाल बेहाल है। अंधे को लगा कि यह सैनिक का सरदार है जरूर, पर मन से कपटी है और ऊपर से मीठा-मीठा बोलता है। उसने सेनापति को भी साफ कह दिया कि पानी नहीं मिल सकेगा। जब यह घटना राजा के कानों तक पहुंची, तो वे चुपचाप कुएं की ओर चल पड़े। उन्होंने अभिवादन कर कहा - बाबा जी! प्यासा हूँ, थोड़ा पानी पिलाने की कृपा कर देंगे क्या? इस पर अंधे को बहुत प्रसन्नता हुई। उसने कहा, जी राजा साहब! अभी पानी पिलाता हूँ। अपनी प्यास बुझाने के बाद उन्होंने अंधे व्यक्ति से पूछा - बाबा, आप देख नहीं पाते, फिर भी कैसे जान पाए कि एक सिपाही, दूसरा सेनापति और मैं एक राजा हूँ? अंधे ने विनम्रता से कहा कि महाराज आपकी वाणी ने ही आपका परिचय कराया।

गिलहरी से पाया ज्ञान

भगवान बुद्ध ज्ञान प्राप्ति के लिए घोर तप में लगे थे। उन्होंने शरीर को काफी कष्ट दिया, यात्राएं की, घने जंगलों में कड़ी साधना की, पर आत्मज्ञान की प्राप्ति नहीं हुई। एक दिन निराश हो बुद्ध सोचने लगे मैंने अभी तक कुछ भी प्राप्त नहीं किया। अब आगे क्या कर पाऊंगा? निराशा, अविश्वास के इन नकारात्मक भावों ने उन्हें क्षुब्ध कर दिया। कुछ ही क्षणों बाद उन्हें प्यास लगी। वे थोड़ी दूर स्थित एक झील तक पहुंचे। वहां उन्होंने एक दृश्य देखा कि एक नन्ही सी गिलहरी के दो बच्चे झील में डूब गए। पहले तो वह गिलहरी जड़वत बैठी रही, फिर कुछ देर बाद उठकर झील के पास गई, अपना सारा शरीर झील के पानी में भिगोया और फिर बाहर आकर पानी झाड़ने लगी। ऐसा वह बार-बार करने लगी। बुद्ध सोचने लगे, इस गिलहरी का प्रयास कितना मूर्खतापूर्ण है। क्या कभी यह इस झील को सुखा सकेगी? किंतु गिलहरी का यह क्रम लगातार जारी था। बुद्ध को लगा मानो गिलहरी कह रही हो कि यह झील कभी खाली होगी या नहीं, यह मैं नहीं जानती, किंतु मैं अपना प्रयास नहीं छोड़ूंगी। अंतत: उस छोटी-सी गिलहरी ने भगवान बुद्ध को अपने लक्ष्य-मार्ग से विचलित होने से बचा लिया। वे सोचने लगे कि जब यह नन्ही गिलहरी अपने लघु सामर्थ्य से झील को सुखा देने के लिए कृत संकल्पित है तो मुझमें क्या कमी है? मैं तो इससे हजार गुना अधिक क्षमता रखता हूँ। यह सोचकर गौतम बुद्ध पुन: अपनी साधना में लग गए और एक दिन बोधिवृक्ष तले उन्हें ज्ञान का आलोक प्राप्त हुआ। कथा असफलता के बावजूद प्रयासों की निरंतरता पर बल देती है। यदि हम प्रयास करना न छोड़ें तो एक न एक दिन लक्ष्य की प्राप्ति हो ही जाती है।

महान् होने की परिभाषा

चीनी दार्शनिक कन्फ्यूशियस की महानता से चीन का सम्राट भी परिचित था। एक दिन वह कन्फ्यूशियस से बोला, 'तुम मुझे उस व्यक्ति के पास ले चलो, जो महान् हो।' कन्फ्यूशियस बोला, 'महामहिम! आपसे अधिक महान् कौन हो सकता है? आप सत्य को जानने की भावना रखते हैं और जो ऐसी भावना रखता है, वही महान् है।' सम्राट बोला लेकिन, मुझसे महान् भी तो कोई होगा? कन्फ्यूशियस बोला, 'आपसे अधिक महान् मैं हूँ, क्योंकि सत्य के प्रति मेरा अनुराग (प्रीति) है।' और तुमसे भी अधिक महान् कौन है? सम्राट ने पूछा। कन्फ्यूशियस बोला, यह तो ढूंढ़ना पड़ेगा। इतना कहकर वह सम्राट को लेकर चल पड़ा। कुछ आगे चलने पर उन्हें एक वृद्ध व्यक्ति दिखा, जो कुआं खोद रहा था। उसे देखकर कन्फ्यूशियस बोला, 'महामहिम! मुझसे भी अधिक महान् यह वृद्ध है।' सम्राट ने पूछा, 'कैसे?' कन्फ्यूशियस बोला, 'इसकी काफी आयु व्यतीत हो चुकी है, शरीर भी दुबला-पतला है, तब भी कुआं खोद रहा है। क्योंकि, इसमें परोपकार की भावना है। परोपकार में ही इसको आनंद की अनुभूति होती है। जिसका तन और मन, दोनों ही आनंद की अनुभूति में निमग्न हों, उससे बढ़कर महान् अन्य कौन हो सकता है?

परीक्षा

श्रावस्ती में एक धनी स्त्री रहती थी जिसका नाम विदेहिका था। वह अपने शांत और सौम्य व्यवहार के कारण दूर-दूर तक प्रसिद्ध थी। सब लोग कहते थे कि उसके समान मृदु व्यवहार वाली दूसरी स्त्री श्रावस्ती में नहीं थी। विदेहिका के घर में एक नौकर था जिसका नाम काली था। काली अपने काम और आचरण में बहुत कुशल और वफादर था। एक दिन काली ने सोचा कि सभी लोग कहते हैं कि मेरी मालकिन बहुत शांत स्वभाव वाली है और उसे क्रोध कभी नहीं आता, यह कैसे संभव है? शायद मैं अपने काम में इतना अच्छा हूँ इसलिए वह मुझ पर कभी क्रोधित नहीं हुई। मुझे यह पता लगाना होगा कि वह क्रोधित हो सकती है या नहीं। अगले दिन काली काम पर कुछ देरी से आया। विदेहिका ने जब उससे विलंब से आने के बारे में पूछा तो वह बोला 'कोई खास बात नहीं।' विदेहिका ने कुछ कहा तो नहीं पर उसे काली का उत्तर अच्छा नहीं लगा। दूसरे दिन काली थोड़ा और देरी से आया। विदेहिका ने फिर उससे देरी से आने का कारण पूछा। काली ने फिर से जवाब दिया - 'कोई खास बात नहीं।' यह सुनकर विदेहिका बहुत नाराज हो गई लेकिन वह चुप रही। तीसरे दिन काली थोड़ा और भी देरी से आया। विदेहिका के कारण पूछने पर उसने फिर से कहा - 'कोई खास बात नहीं।' इस बार विदेहिका ने अपना पारा खो दिया और काली पर चिल्लाने लगी। काली हंसने लगा तो विदेहिका ने दरवाजे के पास रखे डंडे से उसके सर पर प्रहार किया। काली के सर से खून बहने लगा और वह घर के बारह भागा। घर के भीतर से विदेहिका के चिल्लाने की आवाज सुनकर बाहर भीड़ जमा हो गई थी। काली ने बाहर सब लोगों को बताया कि विदेहिका ने उसे किस प्रकार डंडे से मारा। यह बात आग की तरह सारे शहर में फैल गई और विदेहिका की ख्याति मिट्टी में मिल गई।

यह कथा सुनाने के बाद बुद्ध ने अपने शिष्यों से कहा - 'विदेहिका की भांति तुम सब भी बहुत शांत, विनम्र और भद्र व्यक्ति के रूप में जाने जाते हो। लेकिन यदि तुम्हारी भी कोई भी काली की भांति परीक्षा ले तो तुम क्या करोगे? यदि लोग तुम्हें भोजन, वस्त्र और उपयोग की वस्तुएं न दे तो तुम उनके प्रति कैसा आचरण करोगे? क्या तुम उन परिस्थितियों में शांत और विनम्र रह पाओगे? हर परिस्थिति में शांत, संयमी और विनम्र रहना ही सत्य के मार्ग पर चलना है।

नंगल डैम। चीफ इंजीनियर के.के.कौल एवं कल्पना कौल को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.पुष्पा साथ में हैं ब्र.कु.भारत भूषण।

राजकोट। दीप प्रज्ज्वलित करते हुए आकाशवाणी की मीरा सौरभ, महिला परिषद की अध्यक्षा जोशीपूरा, रेणु यज्ञनिक, गीरा मेहता, ब्र.कु.भारती तथा अन्य।

नूह। सर्वधर्म सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए अशोक गोयल, फादर विजय कुमार, नुरूउद्दीन नूर, ब्र.कु.कमलेश, ब्र.कु.रेणु तथा अन्य।

कुल्लू। दीप प्रज्ज्वलित करते हुए महिला आयोग की अध्यक्ष धनेश्वरी ठाकुर, परमलता ठाकुर प्रसाद, ब्र.कु.किरण।

अचलपूर। प्लेटिनम जुबली कार्यक्रम के ग्रुप फोटो में हैं कैलाश शर्मा, हरिशंकर अग्रवाल, ब्र.कु.अवधेश, ब्र.कु.लता, ब्र.कु.भोपाल।

अलीगंज। नगरपालिका के अध्यक्ष को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.संगीता।

बराडा। शिवजयंति महोत्सव में उपस्थित हैं स्टेट बैंक ऑफ पटियाला के मैनेजर, ब्र.कु.नीति, ब्र.कु.सविता, ब्र.कु.निजा।